



Food and Agriculture
Organization of the
United Nations



Ministry of Agriculture
and Farmer's Welfare
Minister of Environment,
Forest and Climate Change



gef
GLOBAL ENVIRONMENT FACILITY
INVESTING IN OUR PLANET

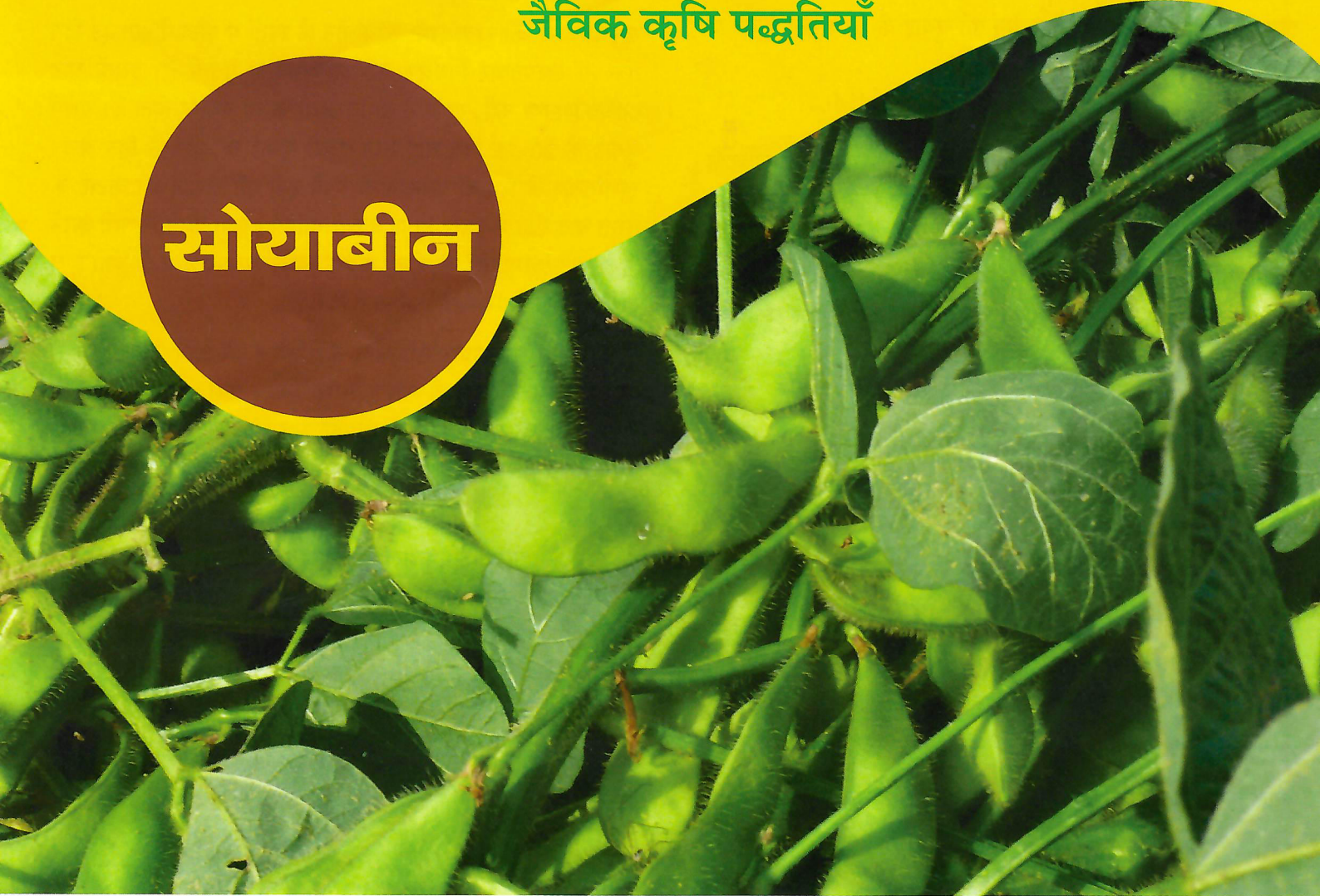
"Green-Ag: Transforming Indian Agriculture for Global Environmental Benefits and the Conservation of Critical Biodiversity and Forest Landscapes"

ग्रीन-एग्रीकल्चर परियोजना

राजाजी-कॉर्बेट लैंडस्केप, उत्तराखण्ड

जैविक कृषि पद्धतियाँ

सोयाबीन



परिचय एवं महत्व

सोयाबीन खरीफ के मौसम की एक मुख्य एवं बहुगुणी फसल है। सोयाबीन में 20-22 प्रतिशत तेल तथा 40-42 प्रतिशत प्रोटीन पाई जाती है। सोयाबीन से प्राप्त होने वाला तेल अन्य वानस्पतिक तेलों की अपेक्षा गुणकारी होता है, तथा इसके उपयोग से हृदय से सम्बन्धित रोगों में कमी आती है। सोयाबीन में 32-35 प्रतिशत तक कार्बोहाईड्रेट पाया जाता है।

जलवायु:

सोयाबीन की खेती के लिये समशीतोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है। इसके जमाव एवं बढ़वार के लिये 25-30 डिग्री.से. तापमान अच्छा रहता है।

भूमि का चुनाव एवं खेती की तैयारी:

सोयाबीन की खेती मटियार से लेकर हल्की दोमट मिट्टी में सफलतापूर्वक कर सकते हैं। दोमट भूमि सबसे अच्छी समझी जाती है। सोयाबीन की खेती के लिये भूमि से अधिक जल निकासी का उचित प्रबन्ध होना भी आवश्यक है। एक ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई के पश्चात बुवाई से पूर्व 2-3 जुताई, हैरो या हल से करके तथा पाटे या लेवलर से खेत को समतल करने पर सोयाबीन की बुवाई के लिये खेत तैयार हो जाता है।

बोने का समय :

उत्तर भारत के मैदानी भागों में जहाँ सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है सोयाबीन को जून के दूसरे पखवाड़े में बोना उचित रहता है। जहाँ सिंचाई के साधन नहीं हैं, वहाँ मानसून आने पर जुलाई के पहले पखवाड़े में बोना उचित रहता है। पर्वतीय क्षेत्रों में सोयाबीन जल्दी बोना चाहिए। अतः मई के अन्तिम सप्ताह से जून के प्रथम पखवाड़े तक का समय बुवाई के लिये उचित है।

प्रजातियाँ :

वी.एल. सोया-2, वी.एल. सोया-21, वी.एल. सोया-47, पी.के.-327, पी.के.-410, पूसा-16,20,24 शिलाजीत, पी.एस.-1092, पी.एस.-1042, पी.के.-262

बोने की विधि :

सोयाबीन को सीड ड्रिल द्वारा या हल के पीछे 45-60 सेमी. कतार से कतार की दूरी पर बोना चाहिए। पौधे से पौधे की दूरी 4-5 सेमी. रखनी चाहिये। बीज की गहराई लगभग 2-3 सेमी. होनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक:

जुताई के समय 5 नाली क्षेत्र हेतु 1.5 कुन्तल नाडेप कम्पोस्ट अथवा 80

किलो वर्मी कम्पोस्ट/इनोकुलेटिड कम्पोस्ट की आवश्यकता होती है। खाद की आपूर्ति के लिये एक यूनिट नाडेप अथवा एक यूनिट वर्मी कम्पोस्ट/इनोकुलेटिड कम्पोस्ट की आवश्यकता होती है। 10 नाली क्षेत्र हेतु 3 कुन्तल नाडेप कम्पोस्ट अथवा 1.6 कुन्तल वर्मी कम्पोस्ट/इनोकुलेटिड कम्पोस्ट पर्याप्त होता है।

बीज दर एवं बीज उपचार:

75 किलो बीज/हेक्टेयर (1.5 किलो/ नाली) की दर से बुवाई करनी चाहिए। जैव उर्वरक से बीज उपचार करने के लिये पी.एस.बी. 250 मिली. या ऐजेटोबैक्टर या एजोस्पाईरिलम 1.5 से 2 मिली प्रति किलोग्राम की दर से करना चाहिये।

खरपतवारों की रोकथाम: सोयाबीन के खेतों में फरू में 40-45 दिन तक ही खरपतवार नियंत्रण की आवश्यकता पड़ती है। इसके बाद अधिकांशतया नहीं, खुर्पी से दो निराईया करना पर्याप्त होता है। प्रथम बुवाई के 20-25 दिन बाद तथा दूसरी बुवाई के 40-45 दिन बाद। खरपतवार के प्रभावी प्रबन्धन के लिये रबी की फसल की कटाई के तुरन्त बाद खेत में गहरी जुताई करनी चाहिये। ऐसा करने से गर्मी करने के कारण खरपतवार के बीज, कवक, कीट इत्यादि नष्ट हो जाते हैं व खरीफ में इनके प्रबन्धन में आसानी होती है।

पौध/फसल संरक्षण: सोयाबीन की फसल के लिये मुख्य रूप से असिंचित खेती में होने के कारण कुरमुला कीट द्वारा क्षति पहुँचाई जाती है इस कीट के रोकथाम के लिये जून माह के अन्तिम सप्ताह प्रकाश प्रपंच का प्रयोग करना चाहिये जो कि प्रति 2 नाली में 1 आवश्यक रूप से हो।

उत्पादन: सोयाबीन की फसल अक्टूबर, नवम्बर माह में तैयार हो जाती है तथा इसका उत्पादन 3 कुन्तल/एकड़ अथवा 70 से 80 किलों प्रति 5 नाली तक पाया जाता है।

भण्डारण: सोयाबीन के भण्डारण हेतु इसके बीजों को पूर्ण रूप से सुखाकर रखना चाहिए। भण्डारण में नुकसान पहुंचाने वाले कीटों से बचाव के लिये 100 ग्राम हल्दी पाउडर 5 कुन्तल में मिलाकर भण्डारण करना चाहिए।



जलागम प्रबन्ध निदेशालय, उत्तराखण्ड

इन्दिरा नगर, फॉरेस्ट कालोनी, देहरादून

फोन: 0135-2768712, 0135-2760170

ईमेल: wmd-ud@nic.in, वेब: www.umduk.gov.in

स्रोत : फसलों का जैविक उत्पादन एवं प्रबन्धन, जैविक खेती कार्यक्रम, कृषि विभाग, पौड़ी गढ़वाल